भजन

तर्ज–जिंदगी की न टूटे लड़ी

मेरे सतगुरू ये सेवा तेरी,
सबसे बढ़िया और सबसे खरी
सेवा का न मोल कोई,अनमोल है सेवा तेरी

1– सेवा का ये अवसर मिला,धाम में तो ये सेवा नहीं
धंन धंन वो साथ हुए,सेवा दिल देके जिसने करी

2– इसमें है नफा ही नफा,नुकसान जरा भी नहीं
तन मन धन से सेवा करी,पहचान के धामधनी

3– सतगुरू मेरे धाम धनी,उनसे निसवत अखंड है मेरी
आए साथ हमारे हैं वो,माया की ही है देह धरी

4– सेवा सनमुख जन्म लो,लिया हुकम सिर चढ़ाए
अब न पीछे हटेंगे कभी,सेवा सुखदाई है ये घनी